صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

सख़ावते मुस्तफ़ा

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

نَوَيْتُ سُنَّتَ الاعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** बख़ील है वोह शख़्स जिस के सामने मेरा ज़िक्र हुवा, फिर उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा।

(مسند احمد بن حنبل، ۱/۴۲۹، حدیث: ۱۷۳۶)

पढ़ता रहूं कसरत से दुरूद उन पे सदा मैं
और ज़िक्र का भी शौक़ पए ग़ौसो रज़ा दे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं **:**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा । ۞ देख कर बयान करूंगा । ۞ पारह 14 सूरतुन्नहूल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً ''पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो'' में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा । ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा । ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा । ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा, बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा । ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेहन बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सख़ावत

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह हौज़नी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि मक़ामे ह़लब (शाम) में मोअज़्ज़िने रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मेरी मुलाक़ात हुई और मैं ने उन से रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़र्च के बारे में पूछा, तो उन्हों ने बताया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास जो कुछ (माल) होता, उसे ख़र्च करने की ज़िम्मादारी मेरी होती थी, बिअ़्सत से वफ़ात शरीफ़ तक येह काम मेरे ह़वाले रहा । जब कोई बे लिबास मुसलमान आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आता तो आप मुझे ह़ुक्म फ़रमाते और मैं किसी से क़र्ज़ लेता और चादर ख़रीद कर उसे उढ़ाता और खाना भी खिलाता । एक दिन एक मुशरिक मेरे पास आया और कहने लगा : ऐ बिलाल ! तुम मेरे सिवा किसी और से क़र्ज़ न लिया करो, मेरे पास कसीर माल है । मैं ने ऐसा ही किया, एक दिन मैं वुज़ू कर के अज़ान देने के लिये खड़ा हुवा तो क्या देखता हूं कि वोह मुशरिक कई ताजिरों के हमराह मेरे पास आया और मुझे बहुत बुरा भला कहा और कहने लगा : ''तुम्हें कुछ मा'लूम है वा'दे में कितने दिन बाक़ी हैं ?'' मैं ने कहा : वक़्ते वा'दा क़रीब आ गया है । उस ने कहा कि सिर्फ़ चार दिन बाक़ी रह गए हैं, अगर इस मुद्दत में तुम ने क़र्ज़ अदा न किया तो मैं तुम्हें ग़ुलाम बना कर बकरियां चरवाऊंगा जैसा कि तुम पहले चराया करते थे । येह सुन कर मुझे फ़िक्र दामनगीर हुई । यहां तक कि मैं इ़शा की नमाज़ पढ़ चुका तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी अपने काशानए अक़्दस में तशरीफ़ ले गए, मैं इजाज़त ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा और अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान हों । वोह मुशरिक जिस से मैं क़र्ज़ा लेता हूं, उस ने मुझे ऐसा ऐसा कहा है, आप के पास भी अदाए क़र्ज़ के लिये कुछ नहीं और मेरे पास भी कुछ नहीं, वोह मुझे फिर रुस्वा करेगा । मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं उन लोगों के पास चला जाऊं जो मुसलमान हो चुके हैं, यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इतना माल अ़ता फ़रमाए कि जिस से मेरा क़र्ज़ अदा हो

जाए । येह कह कर मैं वहां से निकल आया । सुब्ह़ के वक़्त जाने के इरादे से जब मैं बाहर निकला तो एक शख़्स दौड़ता हुवा मेरे पास आया और कहने लगा : ऐ बिलाल ! रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप को बुलाया है ।'' मैं वहां पहुंचा तो क्या देखता हूं कि सामान से लदे हुवे चार ऊंट मौजूद हैं । मैं ने अन्दर आने की इजाज़त मांगी तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुबारक हो ! **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारे क़र्ज़ की अदाएगी का सामान कर दिया, फिर फ़रमाया : तुम ने चार ऊंट देखे ? मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां । आप ने फ़रमाया कि येह ऊंट ह़ाकिमे फ़दक ने भेजे हैं, येह इन पर लदा हुवा ग़ल्ला और कपड़े सब तुम रख लो और इन के ज़रीए अपना क़र्ज़ा अदा कर दो । मैं ने हुक्म की ता'मील करते हुवे ऐसा ही किया, फिर मैं मस्जिद में आया और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम अ़र्ज़ किया, तो आप ने पूछा ! उस माल से तुझे क्या फ़ाइदा ह़ासिल हुवा ? मैं ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वोह तमाम क़र्ज़ अदा फ़रमा दिया, जो उस के रसूल पर था, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस माल में से कुछ बाक़ी भी बचा है ? मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''मुझे इस से भी सबुकदोश (या'नी बे तअ़ल्लुक़) करो ! जब तक येह किसी ठिकाने न लगेगा, मैं घर नहीं जाऊंगा ।'' आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़े इ़शा से फ़ारिग़ हुवे तो मुझे बुला कर उस बक़िय्या माल का ह़ाल दरयाफ़्त किया, मैं ने अ़र्ज़ की : वोह मेरे पास है कोई साइल नहीं मिला । नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रात को मस्जिद ही में रहे । दूसरे रोज़ नमाज़े इ़शा के बा'द मुझे फिर बुलाया, मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने आप को सबुकदोश कर दिया । येह सुन कर आप ने तकबीर कही और ख़ुदा का शुक्र अदा किया, क्यूंकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को डर था कि कहीं ऐसा न हो कि मौत आ जाए और वोह माल मेरे पास हो । इस के बा'द मैं हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे चलने लगा, यहां तक कि आप काशानए अक़्दस में तशरीफ़ ले गए ।

(سنن ابو داؤد، کتاب الخراج والفئی والامارۃ، ج۳، ص۲۳۰۔۲۳۲، حدیث۳۰۵۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किस क़दर सख़ावत फ़रमाया करते थे कि कोई भी चीज़ अपने पास रखना गवारा न फ़रमाते, बल्कि जब तक लोगों में तक़्सीम न फ़रमा देते, उस वक़्त तक मुत़मइन न होते थे, ख़ुद किसी चीज़ की ह़ाजत होने के बा वुजूद भी ग़रीबों और मोह़ताजों पर सदक़ा कर दिया करते और साइल को इस क़दर नवाज़ते कि उसे दोबारा मांगने की ह़ाजत ही पेश न आती । मगर अफ़सोस ! सद अफ़सोस ! हमारी ह़ालत येह है कि दुन्या की मह़ब्बत दिल से कम होने का नाम नहीं लेती और हर वक़्त दुन्या की ने'मतें और असाइशें बढ़ाने ही की धुन है ।

ह़ज़रते सय्यिदुना मज्मअ़ अन्सारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मुतअ़ल्लिक़ बयान करते हैं कि उन्हों ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुझे दुन्या (की आसाइशों) से बचा लेने का एह़सान, इस (या'नी दुन्या) की कुशादगी (मसलन मालो दौलत वग़ैरा) की सूरत में मिलने वाली ने'मत से अफ़्ज़ल है । क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये दुन्या को पसन्द नहीं फ़रमाया, इस लिये मुझे वोह ने'मतें जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये पसन्द फ़रमाईं, उन ने'मतों से ज़ियादा प्यारी हैं, जो उस ने अपने नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के लिये ना पसन्द फ़रमाईं । (شُعَبُ الْاِیمان، ج٤ص١١٧حدیث٤٤٨٩مُلَخَّصاً)

याद रखिये ! दुन्या के मालो दौलत की कसरत और इस की ख़ूब आसाइशें होना बे शक ने'मत है मगर इन चीज़ों से बच कर रहना येह बड़ी ने'मत है । (नेकी की दा'वत, स. 35)

दुन्या मीठी सर सब्ज़ है

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : दुन्या मीठी सर सब्ज़ है, जो इस में ह़लाल त़रीक़े से माल कमाता है और सह़ीह़ हुक़ूक़ में ख़र्च करता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा और उस को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और जो इस में ह़राम त़रीक़े से माल कमाता है और इस को ग़ैरे ह़क़ में ख़र्च करता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को दारुल हवान (या'नी ज़िल्लत के घर) में दाख़िल फ़रमाएगा ।

(شعب الایمان، ۳۹۶/۴، حدیث: ۵۵۲۷)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़ैज़ुल क़दीर में तह़रीर फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि दुन्या फ़ी नफ़्सही (या'नी दर अस्ल) मज़मूम नहीं है, चूंकि येह आख़िरत की खेती है, इस लिये जो शख़्स शरीअ़त की इजाज़त से दुन्या की कोई चीज़ ह़ासिल करे, तो येह चीज़ आख़िरत में उस की मदद करती है। (فیض القدیر، ۳/۲۸۷، تحت الحدیث: ۴۲۷۳)

हमें भी चाहिये कि ज़रूरत से ज़ियादा दुन्या के पीछे भागने और ह़राम ज़राएअ़ इख़्तियार कर के मालो दौलत जम्अ़ करने के बजाए रिज़्क़े ह़लाल कमाने का ज़ेह़न बनाएं और ह़स्बे इस्तित़ाअ़त सदक़ा व ख़ैरात भी करते रहें, अपने रिश्ता दारों, पड़ोसियों और दीगर ग़रीबों की माली मदद भी करें। ह़क़ीक़त येह है कि जो किसी की मदद करता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उस की मदद फ़रमाता है और राहे ख़ुदा में देने से माल बढ़ता है घटता नहीं।

सदक़े के फ़ज़ाइलो बरकात से माला माल फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : सदक़ा माल में कमी नहीं करता और **अल्लाह** तआ़ला मुआ़फ़ करने की वज्ह से बन्दे की इ़ज़्ज़त ही बढ़ाता है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर इन्किसारी करता है, तो **अल्लाह** तआ़ला उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है। (صحیح مسلم ص ۱۳۹۷ حدیث ۲۵۸۸)

हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने बे नियाज़ी थी कि दरे अक़्दस में माल रखना भी गवारा न फ़रमाते बल्कि फ़ौरन उसे सदक़ा फ़रमा दिया करते थे, चुनान्चे, एक रोज़ नमाज़े अ़स्र का सलाम फेरते ही आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दौलत ख़ाने में तशरीफ़ ले गए, फिर जल्दी से बाहर आए, सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को तअ़ज्जुब हुवा ! आप ने फ़रमाया कि मुझे नमाज़ में ख़याल आ गया कि सदक़े का कुछ सोना घर में पड़ा है, मुझे पसन्द न आया कि रात हो जाए और वोह घर में पड़ा रहे, इस लिये जा कर उसे तक़्सीम करने का कह आया हूं। (صحیح البخاری، کتاب العمل فی الصلاۃ، ج۱، ص۴۱۱، حدیث ۱۲۲۱)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : एक रोज़ मैं नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ था, जब आप ने उहुद पहाड़ को देखा तो फ़रमाया : "अगर येह पहाड़ मेरे लिये सोना बन जाए तो मैं पसन्द नहीं करूंगा कि इस में से एक दीनार भी मेरे पास तीन दिन से ज़ियादा रह जाए, सिवाए उस दीनार के जिसे मैं अदाए क़र्ज़ के लिये रख छोडूं ।

(صحیح البخاری، کتاب فی الاستقراض، ج۲، ص۱۰۵، حدیث۲۳۸۸)

सब से बढ़ कर सख़ी

शहनशाने नबुव्वत, क़ासिमे ने'मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने सख़ावत बयान करते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों में सब से बढ़ कर सख़ी हैं और सख़ावत का दरया सब से ज़ियादा उस वक़्त जोश पर होता, जब रमज़ान में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर होते, जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام (रमज़ानुल मुबारक की) हर रात में ह़ाज़िर होते और रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَ التَّسْلِيْم उन के साथ क़ुरआने अ़ज़ीम का दौर फ़रमाते । पस रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तेज़ चलने वाली हवा से भी ज़ियादा ख़ैर के मुआ़मले में सख़ावत फ़रमाते ।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, ब ह़वाला सह़ीह़ बुख़ारी जि. 1 स. 9 ह़दीस 6)

वाह क्या जूदो करम है शहे बत़ह़ा तेरा नहीं सुनता ही नहीं मांगने वाला तेरा
धारे चलते हैं अ़त़ा के वोह है क़त़रा तेरा तारे खिलते हैं सख़ा के वोह है ज़र्रा तेरा
अग़्निया पलते हैं दर से वोह है बाड़ा तेरा अस्फ़िया चलते हैं सर से वोह है रस्ता तेरा

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी किसी साइल को जवाब में "ला" (या'नी नहीं) का लफ़्ज़ नहीं फ़रमाया । (शिफ़ा शरीफ़ जि. 1 स. 111) एक बार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे गोहरबार में 70 हज़ार दिरहम लाए गए, तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह दिरहम एक चटाई पर रखे और पास खड़े हो कर तक़्सीम फ़रमाने लगे । किसी साइल को ख़ाली नहीं लौटाया, ह़त्ता कि इस से फ़ारिग़ हो गए ।

(اخلاق النبی و آدابہ لابی الشیخ الاصبھانی، واماذکر من جودہ وسخائہ، الحدیث: ۹۵، ص ۳۰، فیہ ذکر سبعین الف درھم)

ला व रब्बिल अ़र्श जिस को जो मिला उन से मिला
बटती है कौनैन में ने'मत रसूलुल्लाह की
हम भिकारी वोह करीम उन का ख़ुदा उन से फ़ुजूं
और न कहना नहीं आ़दत रसूलुल्लाह की

बा'ज़ अवक़ात ऐसा भी होता कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी से कोई चीज़ ख़रीदते, क़ीमत अदा करने के बा'द वोह चीज़ उसी को या किसी दूसरे को अ़ता फ़रमा देते । एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक ऊंट ख़रीदा, फिर वोही ऊंट उन को बतौ़रे अ़तिय्या इ़नायत फ़रमा दिया । (صحیح البخاری ،کتاب البیوع،ج۲،ص۱۸، حدیث۲۰۹۷) इसी त़रह़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से एक ऊंट का बच्चा ख़रीदा, फिर वोही ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को अ़ता फ़रमा दिया ।

(بخاری، ۲/۲۳،حدیث: ۲۱۱۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किस क़दर सख़ावत फ़रमाने वाले थे कि जो चीज़ अपनी ज़रूरत के लिये ख़रीदी होती, वोह भी ब तौ़रे तोह़फ़ा किसी को अ़ता फ़रमा देते, हमें भी चाहिये कि हम भी प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस प्यारी सुन्नत पर अ़मल करने और मुसलमानों के दिल में ख़ुशी दाख़िल करने की निय्यत से एक दूसरे को तोह़फ़ा पेश करने की आ़दत बनाएं कि तोह़फ़ा देने से मह़ब्बत बढ़ती और अ़दावत दूर होती है जैसा कि

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ता ख़ुरासानी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''एक दूसरे के साथ मुसाफ़ह़ा करो, इस से कीना जाता रहता है और हदिय्या (या'नी तोह़फ़ा) भेजो, आपस में मह़ब्बत होगी और दुश्मनी जाती रहेगी ।

(مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الادب ،باب ماجآء فی المصافحہ ،الحدیث ۴۶۹۳، ج۲،ص۱۷۱)

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : येह दोनों अ़मल बहुत ही मुजर्रब हैं जिस से मुसाफ़ह़ा करते रहो, उस से दुश्मनी नहीं होती, अगर इत्तिफ़ाक़न कभी हो भी जाए तो इस की बरकत से ठहरती नहीं, यूंही एक दूसरे को हदिय्या देने से अ़दावतें ख़त्म हो जाती हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 368)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! तोह़फ़े का लैन दैन हो या फिर कोई और मुआ़मला ह़लाल ज़रीआ़ ही इख़्तियार किया जाए, क्यूंकि ह़राम ज़रीए़ से ह़ासिल होने वाले माल को खाना, पीना, पहनना, या किसी और काम में इस्ते'माल करना ह़राम व गुनाह है, इस की सज़ा दुन्या में माल की क़िल्लतो ज़िल्लत और बे बरकती है और आख़िरत में सज़ा जहन्नम की भड़कती हुई आग का दर्दनाक अ़ज़ाब है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जो शख़्स ह़राम माल कमाता है और फिर सदक़ा करता है, उस से क़बूल नहीं किया जाएगा और उस से ख़र्च करेगा तो इस के लिये उस में बरकत न होगी और उसे अपने पीछे छोड़ेगा तो येह उस के लिये दोज़ख़ का ज़ादे राह होगा।

(شرح السنۃ للبغوی ج۴ ص۲۰۶، ۲۰۵ حدیث ۲۰۲۳ دار الکتب العلمیۃ بیروت)

लिहाज़ा हमें चाहिये कि जाइज़ त़रीक़े से माल कमाएं और अपनी ज़रूरत के इ़लावा जो बचता नज़र आए, उसे फ़ुज़ूलिय्यात में बरबाद करने के बजाए अपने मोह़ताजो ग़रीब मुसलमान भाइयों की माली मदद करें, मसाजिद, मदारिस और नेकी के कामों में तरक़्क़ी के लिये ज़ियादा से ज़ियादा अपना माल ख़र्च करें, तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ढेरों बरकतें नसीब होंगी, चुनान्चे, पारह 3 सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 274 में इरशाद होता है :

اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّیْلِ وَ النَّهَارِ سِرًّا وَّ عَلَانِیَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْۚ وَ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿۲۷۴﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह जो अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में छुपे और ज़ाहिर उन के लिये उन का नेग है उन के रब के पास उन को न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म*

इसी त़रह़ पारह 3 सूरतुल बक़रह आयत 261 में इरशाद होता है :

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۶۱﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन की कहावत जो अपने माल* ***अल्लाह*** *की राह में ख़र्च करते हैं उस दाने की त़ह़ जिस ने उगाईं सात बालें हर बाल में सो दाने और* ***अल्लाह*** *इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे और* ***अल्लाह*** *वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है*

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ***अल्लाह*** की राह में माल ख़र्च करेंगे तो वोह मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ जो ज़मीनो आस्मान और सारे जहान का ख़ालिक़ो मालिक है, वोह करीमो जव्वाद रब عَزَّوَجَلَّ करम फ़रमाएगा और हमारे माल को बढ़ाएगा । कितने ही ख़ुश नसीब मुसलमान ऐसे हैं जो अपने माल के हुक़ूक़े वाजिबा अदा करते हैं, ख़ुश दिली से बर वक़्त ज़कात व फ़ित्रा अदा करते हैं, अपने माल मां बाप, बहन भाई और अवलाद पर ख़र्च करते हैं, अपने अ़ज़ीज़ो अक़रिबा की मौत पर उन के ईसाले सवाब के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी कामों में अपने माल को ख़र्च करते, सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मीलाद मनाते नीज़ नेक निय्यती से शिफ़ा ख़ाने बनवाते हैं, हुक़ूक़े आ़म्मा का लिह़ाज़ रखते हुवे इख़्लास के साथ क़ुरआन ख़्वानी व इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त और सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त के इनइ़क़ाद पर ख़र्च करते हैं, मसाजिद व मदारिस की ता'मीर में ह़िस्सा लेते हैं, दर्सो तदरीस, दर्से निज़ामी या'नी आ़लिम कोर्स में मुआ़वनत करते हैं, मसलन मुदर्रिसीन के मुशाहरे (Salary) त़लबा की किताबें, त़आ़मो क़ियाम के अख़राजात वग़ैरा, क़ुरआने करीम (ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा) की ता'लीम में मदद करते हैं, मस्जिद के इन्तिज़ामी अख़राजात मसलन बिजली और सूई गेस के बिल वग़ैरा की अदाएगी करते या उस में ह़िस्सा लेते हैं । दीने इस्लाम की तरवीजो इशाअ़त, सुन्नतों के इह़या, नेकी की दा'वत को आ़म करने के लिये ख़र्च करते हैं, मसलन मदनी क़ाफ़िलों

में सफ़र करने वाले ग़रीब इस्लामी भाइयों को ज़ादे सफ़र दे कर, सुन्नतों भरा दर्स देने की आरज़ू रखने वाले ग़रीब इस्लामी भाइयों को ''फ़ैज़ाने सुन्नत'' दिला कर, अपनी दुकान, मार्केट, मस्जिद, महल्ले, दफ़्तर, कॉलेज वग़ैरा में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की इस्लाही रसाइल या बयानात की केसटें (ऑडियो, वीडियो) तक़्सीम कर के अपनी रक़म राहे ख़ुदा में ख़र्च करते हैं, **अल्लाह** तबारक व तआ़ला उस के माल को बढ़ाएगा और उस का सवाब 700 गुना तक बढ़ाएगा और इसी पर बस नहीं, बल्कि इरशाद फ़रमाया जाता है : وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** इस भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे।

आइये ! तरग़ीब के लिये नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जूदो अ़त़ा के मज़ीद वाक़िआ़त सुनते हैं ताकि हमें भी दीन की तरवीजो इशाअ़त, मसाजिदो मदारिस की ख़िदमत, मुसलमानों की माली मदद और राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की रग़बत हो। चुनान्चे,

प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सख़ावत के वाक़िआ़त

ग़ज़वए हुनैन में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस क़दर कसरत से सख़ावत फ़रमाई जिस का अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आ'राब (देहात में रहने वालों) में बहुत सों को सो सो ऊंट अ़त़ा फ़रमाए। (بخاری، ۳/۱۱۸، حدیث: ۴۳۳۷)

ह़ज़रते सफ़्वान बिन उमय्या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने (इस्लाम लाने से पहले ग़ज़वए हुनैन के मौक़अ़ पर) बकरियों का सुवाल किया, जिन से दो पहाड़ों का दरमियानी जंगल भरा हुवा था, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह सब उन को दे दीं। उन्हों ने अपनी क़ौम में जा कर कहा : ''ऐ मेरी क़ौम ! तुम इस्लाम ले आओ ! **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की क़सम ! मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ऐसी सख़ावत फ़रमाते हैं कि फ़क़्र (या'नी मोह़ताजी) का ख़ौफ़ नहीं रहता।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الفضائل والشمائل، ج۲، ص۳۴۶، حدیث ۵۸۰۶)

ह़ज़रते सईद बिन मुसय्यिब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सफ़्वान बिन उमय्या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हुनैन के दिन मुझे माल अ़त़ा फ़रमाने लगे, ह़ालांकि आप मेरे नज़र में मबग़ूज़ तरीन थे, पस आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे अ़त़ा फ़रमाते रहे, यहां तक कि मेरी नज़र में मह़बूब तरीन हो गए। (سنن الترمذی، کتاب الزکاۃ، ج۲، ص۱۴۷، حدیث۶۶۶)

उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उस एक दिन की अ़त़ा, सख़ी बादशाहों की उ़म्र भर की सख़ावतो बख़्शिश से ज़ाइद थी, जंगल बकरियों से भरे हुवे हैं और हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अ़त़ा फ़रमा रहे हैं और मांगने वाले हुजूम करते चले आते हैं और हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पीछे हटते जाते हैं। यहां तक कि जब सब अमवाल तक़्सीम हो लिये, एक आ'राबी (या'नी अ़रब के देहात में रहने वाले) ने रिदाए मुबारक (या'नी चादर मुबारक) बदने अक़्दस पर से ख़ींच ली, जिस से मुबारक कन्धे और कमर शरीफ़ पर उस का निशान बन गया, इस पर इतना फ़रमाया : ऐ लोगो ! जल्दी न करो, वल्लाह तुम मुझे किसी वक़्त बख़ील न पाओगे।

(ملتقطاً، صحیح البخاری، کتاب الجهاد والسیر، باب الشجاعة فی الحرب۔۔الخ، الحدیث ۲۸۲۱، ج۲، ص۲۶۰، ملفوظات، ص۱۲۲)

इसी त़रह़ ह़ज़रते सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि एक औ़रत एक चादर ले कर आई, उस ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह मैं ने अपने हाथ से बुनी है, मैं आप के पहनने के लिये लाई हूं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ज़रूरत थी, इस लिये आप ने वोह चादर ले ली, फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारी त़रफ़ निकले और उसी चादर को ब त़ौरे तहबन्द बांधे हुवे थे एक सह़ाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने देख कर अ़र्ज़ की : क्या अच्छी चादर है येह मुझे पहना दीजिये। आप ने फ़रमाया : हां ! कुछ देर के बा'द आप मजलिस से उठ गए, फिर वापस तशरीफ़ लाए और

वोह चादर लपेट कर उस सह़ाबी के पास भेज दी । सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने उस से कहा कि तुम ने अच्छा नहीं किया, ह़ालांकि तुम्हे मा'लूम है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी साइल का सुवाल रद नहीं फ़रमाते । वोह सह़ाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه कहने लगे : **अल्लाह** की क़सम ! मैं ने सिर्फ़ इस लिये सुवाल किया कि जिस दिन मैं मर जाऊं येह चादर (ब त़ौरे तबर्रुक) मेरा कफ़न बने । ह़ज़रते सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि वोह चादर उस का कफ़न ही बनी । (صحیح البخاری، کتاب العمل فی اللباس، ج۴، ص۵۴، حدیث۵۸۱۰)

मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहां की ने'मतें हैं उन के ख़ाली हाथ में

विसाले ज़ाहिरी के बा'द सख़ावते मुस्त़फ़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दो जहानों के सरदार हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को मालिको मुख़्तार बनाया, अपने तमाम ख़ज़ानों की चाबियां भी अ़त़ा फ़रमा रखी हैं, मगर अपने पास कुछ बचा कर नहीं रखते, बल्कि सब तक़्सीम फ़रमा देते । बल्कि ह़याते ज़ाहिरी की त़रह़ विसाले ज़ाहिरी के बा'द भी अपनी उम्मत के परेशान ह़ालों पर अ़त़ाओं की बारिश फ़रमाते हैं । अगर किसी के ज़ेह्न में येह वस्वसा आए कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो इस दुन्या से पर्दा फ़रमा गए तो अब क्यूंकर साइलों की दाद रसी फ़रमाते हैं ? तो याद रखिये ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के तमाम नबी अपने अपने मज़ारात में ह़यात हैं ।

सरकारे आ'ला ह़ज़रत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ह़याते ह़क़ीक़ी, दुन्यावी, रूह़ानी और जिस्मानी से ज़िन्दा हैं, अपने मज़ाराते त़य्यिबा में नमाज़ें पढ़ते हैं, रोज़ी दिये जाते हैं, जहां चाहें तशरीफ़ ले जाते हैं, ज़मीनो आस्मान की सल्त़नत में तसर्रुफ़ फ़रमाते हैं ।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : اَلْاَنْبِيَاءُ اَحْيَاءٌ فِيْ قُبُوْرِهِمْ يُصَلُّوْن हज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने मज़ारात में ज़िन्दा हैं और नमाज़ अदा फ़रमाते हैं। (مجمع الزوائد باب ذکر الانبیاء علیہم السلام ۸/ ۳۸۶، حدیث: ۱۳۸۱۲ از فتاوی رضویہ، ۱۴/ ۶۷۵) जब कि एक और हदीसे पाक में है : اِنَّ اللهَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَنْ تَاْكُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاءِ فَنَبِيُّ اللهِ حَيٌّ يُرْزَقُ बे शक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़मीन पर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जिस्मों को खाना हराम फ़रमा दिया है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ज़िन्दा हैं और उन को रोज़ी भी दी जाती है।

(سنن ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ذکر وفاتہ ودفنہ صلی اللہ علیہ وسلم، ج ۲، ص ۲۹۱، الحدیث ۱۶۳۷)

जब कि हज़रते अल्लामा इमाम जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये मज़ारात से बाहर जाने और आस्मानों और ज़मीन में तसर्रुफ़ की इजाज़त होती है।

(الحاوی للفتاوی رسالہ تنویر الحلک دار الفکر بیروت ۲/ ۲۶۳ فتاوی رضویہ، ج ۱۴، ص ۶۸۵ تا ۹۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा अहादीसे तय्यिबा और उलमाए किराम की तसरीहात से मा'लूम हुवा कि हमारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और दीगर तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने अपने मज़ारात में न सिर्फ़ हयात हैं, बल्कि उन्हें रिज़्क़ भी दिया जाता है, जहां भर में तशरीफ़ ले जाते और ज़मीनो आस्मान की सल्तनत में तसर्रुफ़ भी फ़रमाते हैं।

आइये ! हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द अपने उम्मतियों की हाजत रवाई, मुश्किल कुशाई के चन्द वाक़िआत सुनते हैं :

- हज़रते सय्यिदुना शैख़ अहमद बिन नफ़ीस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं एक बार मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में सख़्त भूक के आलम में सरकारे आली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर पर हाज़िर हो कर अर्ज़ गुज़ार हुवा, या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं भूका हूं। यका यक आंख लग गई, दरीं असना (या'नी इसी दौरान) किसी ने जगा दिया और मुझे साथ चलने की दा'वत दी, चुनान्चे, मैं उन के

साथ उन के घर आया, मेज़बान ने खजूरें, घी और गन्दुम की रोटी पेश कर के कहा : पेट भर कर खा लीजिये, क्यूंकि मुझे मेरे जद्दे अमजद, मक्की मदनी मुहम्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप की मेज़बानी का हुक्म दिया है । आइन्दा भी जब कभी भूक महसूस हो हमारे पास तशरीफ़ लाया करें । (حُجَّۃُ اللّٰہِ عَلَی الْعٰلَمِین ص ۵۷۳)

बे मांगे देने वाले की ने'मत में गर्क़ हैं
मांगे से जो मिले किसे फ़ह्म इस क़दर की है

- हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन मुहम्मद सूफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं तीन महीनों तक जंगलों में फिरता रहा, यहां तक कि मेरी सब खाल गल गई । बिल आख़िर मैं मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا हाज़िर हुवा और मैं ने सरवरे कौनैन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम अर्ज़ किया और सो गया । ख़्वाब में जनाबे रिसालते मआब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से शरफ़याब हुवा, आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे थे : अहमद ! तू आ गया देख तेरा क्या हाल हो गया है ! मैं ने अर्ज़ की : اَنَا جَائِعٌ وَّاَنَا ضَیْفُکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं भूका हूं और आप का महेमान हूं । सरकारे दो जहां صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हाथ खोल ! जब मैं ने अपना हाथ खोला तो उस में चन्द दिरहम थे, जब आंख खुली तो वोह दिरहम मेरे हाथ में मौजूद थे, मैं ने बाज़ार से जा कर रोटी और फ़ालूदा ख़रीद कर खाया ।

(आशिक़ाने रसूल की 130 हिकायात, स. 27، وفاء الوفاء ج ۲ ص ۱۳۸۱، جذب القلوب ص ۲۰۷)

मांगें गे मांगे जाएंगे मुंह मांगी पाएंगे
सरकार में न ''ला'' है न हाजत ''अगर'' की है

- हज़रते अ़ल्लामा अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ली इब्ने जौज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी किताब ''उ़यूनुल हिकायात'' में तहरीर करते हैं : एक परहेज़गार शख़्स का बयान है : ''मैं मुसल्सल तीन साल से हज

की दुआ़ कर रहा था, लेकिन मेरी ह़सरत पूरी न हुई, चौथे साल ह़ज का मौसिमे बहार था और दिल आरज़ूए ह़रम में बे क़रार था। एक रात जब मैं सोया तो मेरी सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ख़्वाब में जनाबे रिसालते मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से शरफ़याब हुवा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''तुम इस साल ह़ज के लिये चले जाना।'' मेरी आंख खुली तो दिल ख़ुशी से झूम रहा था। सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की येह मीठी मीठी आवाज़ कानों में रस घोल रही थी : ''तुम इस साल ह़ज के लिये चले जाना।'' बारगाहे नबुव्वत से ह़ज की इजाज़त मिल चुकी थी, मैं बहुत शादां व फ़रह़ां था। अचानक याद आया कि मेरे पास ज़ादे राह (या'नी सफ़र का ख़र्च) तो है नहीं ! इस ख़याल के आते ही मैं ग़मग़ीन हो गया। दूसरी शब, मह़बूबे रब, शहनशाने अ़रब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़्वाब में फिर ज़ियारत हुई, लेकिन मैं अपनी ग़ुरबत का ज़िक्र न कर सका इसी त़रह़ तीसरी रात भी ख़्वाब में बारगाहे रिसालत से हुक्म हुवा : ''तुम इस साल ह़ज को चले जाना।'' मैं ने सोचा, अगर मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चौथी बार ख़्वाब में तशरीफ़ लाए तो मैं अपनी ह़ालत के मुतअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ कर दूंगा।

आह ! पल्ले ज़र नहीं रख़्ते सफ़र सरवर नहीं
तुम बुला लो तुम बुलाने पर हो क़ादिर या नबी

चौथी रात फिर सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे ग़रीब ख़ाने में जल्वागरी फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया : ''तुम इस साल ह़ज को चले जाना।'' मैं ने दस्त बस्ता अ़र्ज़ की : ''मेरे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे पास अख़राजात नहीं हैं।'' इरशाद फ़रमाया : ''तुम अपने मकान में फुलां जगा खो दो ! वहां तुम्हारे दादा की ज़िरह

मौजूद होगी ।" इतना फ़रमा कर सुल्ताने बहरोबर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए । सुब्ह जब मेरी आंख खुली तो मैं बहुत खुश था । नमाज़े फ़ज्र के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बताई हुई जगह खोदी तो वहां वाक़ेई एक क़ीमती ज़िरह मौजूद थी, वोह बिल्कुल साफ़ सुथरी थी, गोया उसे किसी ने इस्ते'माल ही न किया हो ! मैं ने उसे चार हज़ार दीनार में बेचा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ शहनशाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नज़रे इनायत से अस्बाबे हज का खुद ही इन्तिज़ाम हो गया । (उ़यूनुल हिकायात स. 326 मुलख़्ख़सन, अज़ आ़शिक़ाने रसूल की 130 हिकायात, स. 84)

जब बुलाया आक़ा ने
खुद ही इन्तिज़ाम हो गए

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे दीने इस्लाम ने हमें मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही, हुस्ने सुलूक और ग़रीबों की मदद, यतीमों की कफ़ालत करने का दर्स दिया है, इसी वज्ह से हर साल साहिबे निसाब अफ़राद पर चन्द शराइत़ पाई जाने की सूरत में ज़कात को फ़र्ज़ फ़रमाया, नफ़्ली सदक़ात के फ़ज़ाइल बयान फ़रमा कर लोगों को सख़ावत का दर्स दिया और बुख़्ल की मज़म्मत बयान फ़रमाई है, लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि ज़कात जैसे अहम फ़रीज़े की अदाएगी में सुस्ती व तंग दिली से काम लेने के बजाए, ख़ालिसतन रज़ाए इलाही की ख़ातिर इस के तमाम शरई मसाइल को मद्दे नज़र रखते हुवे अदाएगी करें और नफ़्ली सदक़ात का भी ज़ेहन बनाएं कि सदक़ा **अल्लाह** तआ़ला को बहुत पसन्द है और आफ़तों और बलाओं को टालने के साथ साथ ग़रीबों मिस्कीनों की बहुत सी ज़रूरियात पूरी होने का सबब है ।

आइये ! सख़ावत का जज़्बा पैदा करने के लिये सख़ावत के फ़ज़ाइल पर 5 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनते हैं :

﴾1﴿... सख़ावत जन्नत के दरख़्तों में से एक दरख़्त है, जिस की टहनियां ज़मीन की त़रफ़ झुकी हुई हैं, जो शख़्स उन में से किसी एक टहनी को पकड़ लेता है, वोह उसे जन्नत की त़रफ़ ले जाती है।

(شعب الایمان، باب فی الجود و السخاء، ۷/ ۴۳۴، حدیث: ۱۰۸۷۵)

﴾2﴿...تَجَافَوْا عَنْ ذَنْبِ السَّخِيِّ فَاِنَّ اللّٰهَ اٰخِذٌ بِيَدِهٖ كُلَّمَا عَثَرَ सख़ी की ग़लती से दर गुज़र करो, क्यूंकि जब भी वोह लग़्ज़िश करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का हाथ पकड़ लेता है। (شعب الایمان، باب فی الجود و السخاء، ۷/ ۴۳۳، حدیث: ۱۰۸۶۷) या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का मददगार होता है कि उसे हलाकत में पड़ने से ख़लासी अ़त़ा फ़रमाता है।

(اتحاف السادۃ المتقین، ۹/ ۷۲۵، ملخصاً)

﴾3﴿...اَلْجَنَّةُ دَارُ الْاَسْخِيَآءِ जन्नत सख़ियों का घर है। (فردوس الاخبار، ۱/ ۳۳۳، حدیث: ۲۴۳۰)

﴾4﴿...सख़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से क़रीब है, जन्नत से क़रीब है, लोगों से क़रीब है, आग से दूर है और कन्जूस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूर है, जन्नत से दूर है, लोगों से दूर है, आग के क़रीब है और जाहिल सख़ी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बख़ील आ़लिम से बेहतर है।

(سنن الترمذی، کتاب البر و الصلۃ، باب ماجاء فی السخاء، ۳/ ۳۸۷، حدیث: ۱۹۶۸ بتغیر قلیل)

﴾5﴿...ऐ इन्सान ! अगर तुम बचा माल ख़र्च कर दो तो तुम्हारे लिये अच्छा है और अगर उसे रोक रखो तो तुम्हारे लिये बुरा है और ब क़दरे ज़रूरत अपने पास रख लो तो तुम पर मलामत नहीं और देने में अपने इ़याल से इब्तिदा करो और ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है।

(صحیح مسلم: کتاب الزکاۃ، الحدیث: ۱۰۳۶، ص ۵۱۶)

इस ह़दीस की शर्ह़ में ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : या'नी अपनी ज़रूरिय्यात से बचा हुवा माल ख़ैरात कर देना ख़ुद तेरे लिये ही मुफ़ीद है कि इस से तेरा कोई काम न रुके और तुझे दुन्या व आख़िरत में इ़वज़ (या'नी बदला) मिल जाएगा और उसे रोके रखना, ख़ुद तेरे लिये ही बुरा है, क्यूंकि वोह चीज़ सड़ गल या और त़रह़ से ज़ाएअ़ हो जाएगी और तू सवाब से मह़रूम हो जाएगा, इसी लिये हुक्म है कि नया

कपड़ा पाओ तो पुराना बेकार कपड़ा ख़ैरात कर दो, नया जूता रब तआ़ला दे तो पुराना जूता जो तुम्हारी ज़रूरत से बचा है, किसी फ़क़ीर को दे दो कि तुम्हारे घर का कूड़ा निकल जाएगा और उस का भला हो जाएगा । मज़ीद फ़रमाते हैं : इस में दो हुक्म बयान हो गए, एक येह कि जो माल इस वक़्त तो ज़ाइद है, कल ज़रूरत पेश आएगी, उसे जम्अ़ रख लो, आज नफ़्ली सदक़ा दे कर कल ख़ुद भीक न मांगो, दूसरे येह कि ख़ैरात पहले अपने अ़ज़ीज़ ग़रीबों को दो, फिर अजनबियों को क्यूंकि अ़ज़ीज़ों को देने में सदक़ा भी है और सिलए रेह़मी भी । (मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 70-71)

सख़ावत की दौलत पाने का ज़ेह्न किस त़रह़ बनाएं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम भी सख़ावत की आ़दत अपनाना चाहते हैं तो आइये ! इस के मुतअ़ल्लिक़ चन्द मदनी फूल सुनने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं :

(1) सख़ावत के फ़ज़ाइल पढ़िये !

सख़ावत के फ़ज़ाइल और बुख़्ल की मज़म्मतों से मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीसे मुबारका नीज़ सह़ाबए किराम और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के वाक़िआ़त का मुत़ालआ़ कीजिये, اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से बुख़्ल की आ़दत छूट जाएगी और सख़ावत का ज़ेह्न बनेगा ।

(2) माल की मह़ब्बत निकाल दीजिये !

अपने दिल से मालो दौलत की मह़ब्बत को निकाल दीजिये, क्यूंकि जब तक मालो दौलत की मह़ब्बत दिल में रहेगी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में देने का दिल नहीं चाहेगा । ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जो दिरहम (या'नी दौलत) की इ़ज़्ज़त करता है, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त उसे ज़िल्लत देता है । मन्क़ूल है, सब से पहले दिरहमो दीनार बने तो शैत़ान ने उन को उठा कर अपनी पेशानी पर रखा, फिर उन को चूमा और बोला : जिस ने इन से मह़ब्बत की वोह मेरा ग़ुलाम है ।

(इह़याउल उ़लूम जि. 3 स. 288 आदाबे त़आ़म, स. 366)

(3) मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही कीजिये !

अपने दिल में मुसलमान भाई की ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा पैदा कीजिये, मसलन अपने दोस्त अह़बाब, रिश्तेदारों या पड़ोसियों की ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करते रहिये, उन के दुख दर्द में शरीक हो कर ह़स्बे इस्तित़ाअ़त उन की ह़ाजतों को पूरा कीजिये । **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो किसी मुसलमान की एक दुन्यवी परेशानी दूर करेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत की परेशानियों में से उस की एक परेशानी दूर फ़रमाएगा और जो तंगदस्त के लिये दुन्या में आसानी मुहय्या करेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में उस के लिये आसानियां पैदा फ़रमाएगा और जो दुन्या में किसी मुसलमान की पर्दापोशी करेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में उस की पर्दापोशी फ़रमाएगा और बन्दा जब तक अपने (मुसलमान) भाई की मदद करता रहता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उस की मदद फ़रमाता रहता है ।

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی السترة علی المسلم، رقم ۱۹۳۷، ج ۳، ص ۳۷۳)

(4) दिल से बुग़्ज़ो कीना निकाल दीजिये !

अपने दिल में किसी मुसलमान के लिये बुग़्ज़ो कीना हो तो उसे भी निकाल दीजिये, क्यूंकि जब दिल में किसी की नफ़रत होगी तो उस पर ख़र्च करने या किसी भी त़रह़ की हमदर्दी करने पर दिल राज़ी नहीं होगा । लिहाज़ा बुग़्ज़ो कीना दूर करने और आपस में मह़ब्बत पैदा करने के लिये सलामो मुसाफ़ह़ा करना भी मुफ़ीद है । ह़दीसे पाक में है : मुसाफ़ह़ा किया करो, कीना दूर होगा और तोह़फ़ा दिया करो, मह़ब्बत बढ़ेगी और बुग़्ज़ दूर होगा ।

(موطا امام مالک، کتاب حسن الخلق، باب ماجاء فی المهاجرة، رقم ۱۷۳۱، ج ۲، ص ۴۰۷)

(5) मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर आप सदक़ा व ख़ैरात का ज़ेह्न पाना चाहते हैं तो दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से बुख़्ल की बीमारी के साथ साथ दीगर बुराइयों से भी छुटकारा नसीब होगा और नेक बनने का जज़्बा नसीब होगा, माल की आफ़ात और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करने के ह़वाले से मज़ीद

मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 415 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बनाम ''**ज़ियाए सदक़ात**'' का मुत़ालआ़ भी बे ह़द मुफ़ीद है । दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net से इस किताब को पढ़ा (Read किया) भी जा सकता है, डाऊन लोड (Download) और प्रिन्ट आऊट (Print Out) भी किया जा सकता है ।

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज के बयान में हम ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते मुबारका और विसाले ज़ाहिरी के बा'द आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सख़ावत के वाक़िआ़त सुनने की सआ़दत ह़ासिल की । इन के वाक़िआ़त के ज़िम्न में सख़ावत और इस के इ़लावा दीगर मदनी फूल भी ह़ासिल किये । यक़ीनन सख़ी शख़्स, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस की मख़्लूक़ के नज़दीक मह़बूब हो जाता है, जब कि बख़ील आदमी को कोई पसन्द नहीं करता । लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम भी अपने प्यारे प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर अ़मल करते हुवे ख़ूब ख़ूब सदक़ा व ख़ैरात करने की आ़दत बनाएं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपने सदक़ात व मदनी अ़त़िय्यात दीगर नेक कामों में ख़र्च करने के साथ साथ दा'वते इस्लामी के जुम्ला मदनी कामों और हर नेक व जाइज़ काम में ख़र्च करने की भी तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । اٰمین بجاہِ النبی الامین صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मजलिसे अइम्मए मसाजिद

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये मुतअ़द्दिद शो'बाजात में मदनी काम कर रही है, इन्ही में से एक शो'बा ''**मजलिसे अइम्मए मसाजिद**'' भी है, याद रखिये ! मस्जिद को आबाद रखने में जो किरदार इमाम, मोअज़्ज़िन और ख़ादिम का होता है, इस से इन्कार मुमकिन नहीं, मगर बे शुमार मसाजिद ऐसी हैं, जिन के अइम्मा व मुअज़्ज़िनीन और ख़ादिमीन के मुशाहरे (तनख़्वाहों) का ख़ातिर ख़्वाह इन्तिज़ाम नहीं हो पाता ।

मजलिसे अइम्मा का अव्वलीन काम मसाजिदे अहले सुन्नत का तह़फ़्फ़ुज़ करना नीज़ मसाजिदे अहले सुन्नत में अहल अइम्मा व मुअज़्ज़िनीन का तक़र्रुर करना, इन के मुशाहरे (तनख़्वाहों) की अदाएगी करना, मसाजिद में दरपेश मसाइल को शरई व तन्ज़ीमी रहनुमाई के बा'द बाहमी मुशावरत से ह़ल करना है, नीज़ मस्जिद कमेटी और अहले मह़ल्ला को तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता करते हुवे इस मदनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ " के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने का मदनी ज़ेह्न देना है।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो !

12 मदनी कामों में से माहाना एक मदनी काम "मदनी क़ाफ़िले में सफ़र"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत आ़म करने, ख़ुद भी नेकियां करने, गुनाहों से बचने, दूसरों को बचाने और नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये और ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये। ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से माहाना एक मदनी काम, राहे ख़ुदा में आ़शिक़ाने रसूल के साथ 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करना भी है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस सिलसिले में दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तर्बिय्यत के बे शुमार मदनी क़ाफ़िले 3 दिन, 12 दिन, 1 माह और 12 माह के लिये मुल्क ब मुल्क, शहर ब शहर और क़रया ब क़रया सफ़र कर के इ़ल्मे दीन और सुन्नतों की मदनी बहारें लुटा रहे और नेकी की दा'वत की धूमें मचा रहे हैं। यक़ीनन राहे ख़ुदा में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के हमराह दा'वते इस्लामी के इन मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना बहुत बड़ी सआ़दत है।

इन मदनी काफ़िलों की बरकत से पन्ज वक़्ता नमाज़ो नवाफ़िल की पाबन्दी के साथ साथ प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें भी सीखने को मिलती हैं और इल्मे दीन ह़ासिल करने का मौक़अ़ मुयस्सर आता है। इल्मे दीन के लिये सफ़र के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि मैं ने रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना है कि जो शख़्स इल्मे (दीन) ह़ासिल करने के लिये सफ़र करता है, तो ख़ुदा तआ़ला उसे जन्नत के रास्तों में से एक रास्ते पर चलाता है और त़ालिबे इल्म की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये फ़िरिश्ते अपने परों को बिछा देते हैं और हर वोह चीज़ जो आस्मानो ज़मीन में है, यहां तक कि मछलियां पानी के अन्दर आ़लिम के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करती हैं और आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद पर ऐसी है जैसी चौधवीं रात के चांद की फ़ज़ीलत सितारों पर और उ़लमा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के वारिसो जा नशीन हैं।

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का तरका दीनारो दिरहम नहीं हैं। उन्हों ने विरासत में सिर्फ़ इल्म छोड़ा है, तो जिस ने इसे ह़ासिल किया, उस ने पूरा ह़िस्सा पाया। (سنن ابوداؤد، کتاب العلم، باب الحث علی طلب العلم، الحدیث ۳۶۴۱، ج۳، ص۴۴۴) लिहाज़ा हम भी इल्मे दीन के ह़ुसूल के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लें, اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ दुन्या की परेशानियां और मसाइल ह़ल होते चले जाएंगे।

फ़िल्में ड्रामों का शैदाई

सरदाराबाद (फ़ैसलाबाद) के अ़लाक़े यूसुफ़ टाऊन नम्बर 2 में मुक़ीम एक इस्लामी भाई का कुछ यूं बयान है कि नेकियों की शाहराह पर गामज़न होने से क़ब्ल मैं गुनाहों के बयाबान में भटक रहा था। नमाज़ें क़ज़ा कर देना, दाढ़ी शरीफ़ मुन्ड़वा देना मेरी आ़दत में शामिल था। फ़िल्में ड्रामें देखना, गाने बाजे सुनना मेरा ओढ़ना बिछौना बन चुका था। मेरी ज़िन्दगी में नेकियों का चांद कुछ इस त़रह़ जगमगाया कि ख़ुश क़िस्मती से कभी कभार दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत करता था।

येह सिलसिला कई महीने तक जारी रहा, मगर मेरे अन्दर कोई ख़ास तब्दीली रूनुमा न हो सकी । एक बार हमारे अ़लाक़े के दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता एक बा रीश व बा इ़मामा इस्लामी भाई ने मुझ पर इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने का ज़ेह्न दिया । उन की मह़ब्बत भरी मीठी गुफ़्तार और हुस्ने किरदार में कुछ ऐसी तासीर थी कि मैं इनकार न कर सका और आ़शिक़ाने रसूल के हमराह 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया । जहां मुझे पन्ज वक़्ता नमाज़े बा जमाअ़त सफ़े अव्वल में अदा करने के साथ साथ प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नतों पर अ़मल करने का जज़्बा मिला नीज़ नमाज़, वुज़ू, ग़ुस्ल के मुतअ़ल्लिक़ बहुत सारी बुन्यादी बातें सीखने का मौक़अ़ मुयस्सर आया । मदनी क़ाफ़िले में मुझे इस क़दर सुकून और इत़मीनान नसीब हुवा कि मैं ने अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा की, दाढ़ी शरीफ़ सजाने की पक्की सच्ची निय्यत कर ली और मदनी क़ाफ़िले से सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ सजा कर ही घर पहुंचा । मैं अपनी ज़िन्दगी की बक़िय्या सांसें, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त में गुज़ारने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद हो कर क़ादिरी अ़त्त़ारी बन गया और अ़लाक़े के दीगर इस्लामी भाइयों के साथ मिल कर दा'वते इस्लामी के मदनी कामों में ह़स्बे इस्तित़ाअ़त कोशिश करने लगा । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम और दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकत से मेरे सात भाई न सिर्फ़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुरीद हो गए बल्कि मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर तन्ज़ीमी त़ौर पर ज़िम्मेदारी की सआ़दत भी मिली और मुझे اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़लाक़ाई मुशावरत के ख़ादिम (निगरान) की ह़ैसिय्यत से ख़िदमत भी नसीब हुई ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث: ۱۷۵)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बात चीत करने की सुन्नतें और आदाब

(1) सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुफ़्तगू इस त़रह़ दिल नशीन अन्दाज़ में ठहर ठहर कर फ़रमाते कि सुनने वाला आसानी से याद कर लेता चुनान्चे, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदा आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم साफ़ साफ़ और जुदा जुदा कलाम फ़रमाते थे, हर सुनने वाला उस को याद कर लेता था।

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عائشہ، الحدیث ۲۶۲۶۹، ج۱۰، ص۱۱۵)

(2) मुस्कुरा कर और ख़न्दा पेशानी से बात चीत कीजिये। छोटों के साथ मुश्फ़िक़ाना और बड़ो के साथ मुअद्दबाना लह्जा रखिये اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ दोनों के नज़दीक आप मोअ़ज़्ज़ज़ रहेंगे।

(3) चिल्ला चिल्ला कर बात करना जैसा कि आज कल बे तकल्लुफ़ी में दोस्त आपस में करते हैं मा'यूब है।

(4) दौराने गुफ़्तगू एक दूसरे के हाथ पर ताली देना ठीक नहीं क्यूंकि ताली, सीटी बजाना मह्ज़ खेल कूद, तमाशा और त़रीक़ए कुफ़्फ़ार है।

(तफ्सीरे नईमी, जि. 9, स. 549)

(5) बात चीत करते वक़्त दूसरे के सामने बार बार नाक या कान में उंगली डालना, थूकते रहना अच्छी बात नहीं, इस से दूसरों को घिन आती है।

(6) जब तक दूसरा बात कर रहा हो, इत़मीनान से सुनें। उस की बात काट कर अपनी बात शुरूअ़ न कर दें।

(7) कोई हक्ला कर बात करता हो तो उस की नक़्ल न उतारें कि इस से उस की दिल आज़ारी हो सकती है।

(8) बात चीत करते हुवे क़ह्क़हा न लगाएं कि सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी क़ह्क़हा नहीं लगाया (क़ह्क़हा या'नी इतनी आवाज़ से हंसना कि दूसरों तक आवाज़ पहुंचे।

(माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 402)

(9) ज़ियादा बातें करने और बार बार क़ह्क़हा लगाने से वक़ार भी मजरूह़ होता है।

(10) सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब तुम किसी दुन्या से बे रग़बत शख़्स को देखो और उसे कम गो पाओ तो उस के पास ज़रूर बैठो क्यूंकि उस पर ह़िक्मत का नुज़ूल होता है।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب الزہد، باب الزہد فی الدنیا، الحدیث ۴۱۰۱، ج ۴، ص ۱۲۲)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब **बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

आ़शिक़ाने रसूल, आएं सुन्नत के फूल
देने लेने चलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 7 दुरूदे पाक और 1 दुआ़

﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِي الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ١٥١ ملخصًا)

﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَیضاً ص ٦٥)

﴾3﴿ रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ٢٧٧)

﴾4﴿ एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَى اللهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

﴾5﴿ **छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِيْ عِلْمِ اللهِ صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللهِ

ह़ज़रते अह़मद सावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** ह़ासिल होता है । (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات)

﴾6﴿ **कुर्बे मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के दरमियान बिठा लिया । इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है ! ! !** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है । (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ١٢٥)

﴾7﴿ **दुरूदे शफ़ाअ़त :**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

शाफ़ेए़ उमम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ! ! !**

(الترغيب والترہيب ج ٢ ص ٣٢٩، حديث ٣١)

हर रात इबादत में गुज़ारने का आसान नुस्ख़ा

ग़राइबुल कुरआन सफ़ह़ा 187 पर एक रिवायत नक़्ल की गई है कि जो शख़्स रात में येह दुआ 3 मरतबा पढ़ लेगा तो गोया उस ने शबे क़द्र को पा लिया । लिहाज़ा हर रात इस दुआ को पढ़ लेना चाहिये ।

दुआ येह है :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ ، سُبْحٰنَ اللهِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْم

(या'नी ख़ुदाए ह़लीम व करीम के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर दगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. **1163-1164**